Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 General Impact Factor : 2.4668, Volume 04, No. 04, October-December, 2018, pp. 217-222

dyk] foKku ,oa okf.kT; ladk;ksa dk Lukrd Nk=&Nk=kvksa dh laosxkRed mi;qDrrk dk lkekftd&vkfFkZd ifjizs{; esa v/;;u

नितिशा सिंह*

i`Lrkouk

मानव व्यवहार को संगठित या सन्तुलित बनाने में संवेगों का विशेष महत्व होता है। क्योंकि उद्दीपक एवं अनुक्रिया के रूप में जहाँ एक ओर वह दूसरों से प्रभावित होता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें प्रभावित भी करता है, व्यवहार की यह प्रक्रिया इतनी सरल और सामान्य लगती है। लेकिन वास्तव में इसका स्वरूप उतना ही सूक्ष्म एवं जटिल होता है। एक संगठित व्यक्ति के लिये आवश्यक है कि वह तनावों, अन्तर्द्वन्द्वों, भग्नाशाओं एवं कुण्ठाओं से मुक्त हो। तनावग्रस्त या चिन्तित व्यक्ति न तो सही ढंग से चिन्तन कर पाता है और न ही परिवेश के साथ उपयुक्त सन्तुलन स्थापित कर सकता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि व्यक्ति उन परिस्थितियों पर अपना विशेष नियंत्रण रखे, जो कि उसके जीवन को व्यग्र और विचलित कर देती है। यह देखा गया है कि विक्षिप्त या विचलित व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अपेक्षित व्यवहार व्यक्त नहीं कर पाता है। संवेगों से प्रभावित होने के कारण उसका प्रत्यक्षीकरण अस्पष्ट अथवा धुँधला होता है। संवेग के अविभूत वह कभी–कभी कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता है। उसका विवेक कार्य नहीं करता, उसका बुद्धि जबाव दे जाती है। कुल मिलाकर संवेग से ग्रसित मानव सत्य का बोध सही ढंग से नहीं कर पाता है। वह आदि को अन्त के रूप में और अन्त को प्रारम्भ के रूप में देखता है। उसके सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक इत्यादि सभी पहलू अस्त–व्यस्त हो जाते हैं। उसमें उन मूल्यों एवं आदर्शों का विकास नहीं होता, जो उसके सजह स्नेह, सहयोग एवं सामंजस्य के परिवेश में आतंक, भय, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, संघर्ष आदि भर देते हैं।

आज के सन्दर्भ में कामुकता एवं लोलपुता की प्रवृत्ति मनुष्य में अधिक पनपती जा रही है। परिणाम स्वरूप्प आध्यात्म के अभाव में वह अपने ही बिम्ब या प्रतिबिम्ब से भयभीत होने लगता हैं। उसमें अनेक प्रकार की मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न होने लगती है। वह व्यामोह, विभ्रमों का शिकार होता है, स्थिर वस्तुयें उसे भागती हुई प्रतीत होती हैं और अस्थिर वस्तुये उसे स्थिर प्रतीत होती है। उसकी दशा उस अंगुलीमाल डाकू की तरह होती है, जिसे खड़े हुये बुद्ध दौड़ते हुए मालूम पड़ते थे। इसका कारण यह है कि अंगुलीमान स्वयं से इतने आंतकित थे कि उन्हें किसी पर भरोसा एवं विश्वास नहीं था।

वर्तमान सन्दर्भ में भी हम देखते हैं कि संवेग से आतंकित मनुष्य कहीं मादकता में डूबा रहता है, कहीं पकट जाल के ताने–बाने बुनता है, कहीं हत्या एवं आत्महत्या में लीन है। कहने का तात्पर्य यह है कि संवेग जहाँ एक व्यक्तित्व को सृजनात्मक बनाता है वही दूसरी ओर उसका विकृत रूप उसे विध्वंसात्मक बनाता है। ऐसी स्थिति में संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्तता) का महत्व अधिक बढ़ जाता है। संवेग का सृजनात्मक स्वरूप ही मनुष्य में मनो वांछित गुणों का विकास करता है अर्थात् वह राक्षस बन जाता है। संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्तता) का स्वरूप ही मर्याछा पुरुषोत्तम राम का आदर्श है, जबकि उनके विपरीत संवेगात्मक अपरिपक्वता का स्वरूप रावण जैसे राक्षसों के स्वरूप को व्यक्त करता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी व्यक्तित्व को संगठित

* शोधार्थी, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान।

एवं समायोजित बनाये रखने के लिए संवेगात्मक उथल–पुथल से ग्रस्त व्यक्ति केवल इदम् लालसाओं का शिकार होता है और उसकी अहम शक्ति दुर्बल हो जाती है, उसका नैतिक मन उस पर किसी भी प्रकार का अंकुश नहीं लगा पता है। परिणामस्वरूप वह स्वयं के लिए एवं परिवेश के लिये अभिशाप बन जाता है।

संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्तता) को समझने के लिये संवेग को समझना आवश्यक है। संवेग के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, जो निम्नलिखित हैं–

cjku] fcu ,o dkVkfoV t ¼1980½ d vuqlkj– ''संवेग का अर्थ भाव की वह अवस्था है, जिसमें शारीरिक उत्तेजन तथा विशिष्ट व्यवहार होते है।''

tEl Mªoj d vuqlkj& ''संवेग शरीर की जटिल अवस्था है जिसमें साँस लेने, नाड़ी, ग्रन्थियाँ, मानसिक दशा, उत्तेजना, अवरोध आदि की अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है और माँसपेशियाँ निर्धारित व्यवहार करने लगती हैं।''

ckfjx] yxQhYM ,o chYM d "kCnksa esa& ''संवेग प्रभावशाली अनुक्रिया के समान होता है। यह शरीर की सामान्य एवं शारीरिक प्रतिक्रियाओं के रूप में व्यक्त होता है।''

Øk ,o Øk d vuqlkj& ''संवेग को प्राणी की उद्वेलित अवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। संवेगात्मक अवस्था में अनुभूति होने के साथ–साथ शारीरिक परिवर्तन भी होते है।''

fdEcy ;ax d "kCnksa esa– ''संवेग प्राणी की उत्तेजित मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक दशा है, जिसमें शारीरिक क्रियायें और शक्तिशाली भावनायें किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट रूप से बढ़ जाती है।''

t-oh- okVlu dk dguk gS fd– ''जीवन के भावनात्मक अथवा संवेगात्मक पहलू स्वयं अथवा महत्व के निकट हैं।''

ih-Vh- ;ax d vuqlkj– ''संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति के शरी में तीव्र उपद्रव है, जिसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है तथा जिसके अन्तर्गत व्यवहार, चेतन, अनुभूति और आन्तरिक क्रियायें शामिल होती है।''

oMoFk d vuqlkj– ''प्रत्येक संवेग एक अनुभूति है और उसी समय एक क्रियात्मक रूप है।''

bfXy'k vkj bfXy'k d vuqlkj– ''संवेग एक जटिल भावात्मक स्थिति है, इसमें गत्यात्मक तथा ग्रंथीय क्रियायें होती हैं अथवा यह वह जटिल व्यवहार है जिसमें अन्तरावयव क्रियायें महत्वपूर्ण हैं।''

संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्तता) के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि मानव व्यवहार को दिशानुकूल तथा संगठित बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि संवेग के विभिन्न पक्षों को समुचित ढंग से प्रस्तुत किया जाये। क्योंकि संवेग मानव को व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। यदि संवेग का स्वरूप सृजनात्मक है, तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने परिवेश के साथ संतुलन बनाये रखने में सक्षम होता है अन्यथा उसका व्यक्तित्व अस्त–व्यस्त हो जाता है। अतः व्यक्तित्व को संगठित बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि संवेग के संरचनात्मक स्वरूप के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण अध्ययन किए जायें।

वर्तमान सन्दर्भ में संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्तता) का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। क्योंकि व्यक्ति–व्यक्ति में, व्यक्ति– समाज में, समाज–समाज में अनेक प्रकार की द्वन्द्वात्मक एवं संघर्षात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं। समाज को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि संवेगात्मक परिपक्वता (उपयुक्ता) के स्वरूप को भली–भाँति समझ लिया जाये। क्योंकि संवेग जहाँ एक ओर प्राणी को चिन्तनशील बनाता है वहीं दूसरी ओर चिन्तन भी करता है। जब तक व्यक्ति पूर्ण रूप से व्यवस्थित एवं संगइित नहीं होगा, तब तक वह शारीरिक व मानसिक दृष्टि से विकसित नहीं होगा। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह किसी भी ऐसे संवेग से ग्रसित न हो जो उसके व्यक्तित्व और समायोजनशीलता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हों।

संवेगात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''संवेगात्मक परिपक्वता का अर्थ यह है कि व्यक्ति अपनी वैयक्तिकता, शक्ति एवं क्षमता का पूर्ण उपयोग अपने प्रभुत्व के लिए करता है।''

okYVj Mh- ¼1976½ d vu|lkj– ''संवेगात्मक परिपक्वता वह प्रतिक्रिया है जिसमें व्यक्ति अन्तः मानसिक एवं अन्त वैयक्तिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य को अधिक उपयुक्त बनाये रखने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है संवेगात्मक अवस्था वह अवस्था है, जिसका भावात्मक स्वरूप बाह्य अथवा आन्तरिक संवेदनाओं के कारण उत्पन्न होता है तथा जिसके परिणाम स्वरूप प्राणी में शारीरिक एवं अन्तरावयव परिवर्तन होता है। जो उस समय प्राणी को क्रियाशील बनाते हैं और संवेगात्मक परिपक्पवता (उपयुक्तता) व्यक्ति की उस क्षमता और योजना को व्यक्त करती है, जिसके द्वारा वह अपने परिवेश में सन्तुलित ढंग से क्रिया करता है।

loxkRed ifjiDork ¼mi;Drrk½ ekiuh dk i'kklu

संवेगात्मक परिपक्वता को मापने के लिये मापनी में 6 पक्ष हैं, जैसे– संवेगात्मक–तनाव, संवेगात्मक–नैराश्य, सामाजिक–दूरी, व्यक्तित्व–विघटन, प्रभुत्वहीनता एवं सम्पूर्ण क्षेत्र। सभी छात्र–छात्राओं से निर्देश को अच्छी प्रकार पढ़कर उत्तर देने के लिये कहा गया। मापनी में दिये गये निर्देश इस प्रकार हैं–

इस मापनी में दिये गये कथनों को आप ध्यान से पढ़ें। प्रत्येक कथन के समाने दिये गये पाँच उत्तरों में से जिसे उप उपयुक्त समझते हों। उस पर सही (✔) का निशान लगा दें। जैसे– बहुत अधिक, अधिक, तटस्थ, कम तथा बहुत कम। इन उत्तरों मे से किसी एक पर ही सही (✔) का निशान लगायें।

उत्तर देते समय बहुत सोच–विचार करने की आवश्यकता नहीं है। आप जो अनुभव करते हैं, वैसे ही उत्तर दें। आपकी सूचनाओं को अत्यन्त गोपनीय रखा जायेगा।

0;fDr lek;ktu lph dk i'kklu

व्यक्तित्व समायोजन के मापन के लिये 6 क्षेत्र हैं, जैसे– स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, आर्थिक एवं सम्पूर्ण क्षेत्र। सभी छात्र–छात्राओं से निर्देशों को अच्छी प्रकार पढ़कर उत्तर देने के लिये कहा गया। मापनी में दिये गये निर्देश इस प्रकार हैं–

आगे के पृष्ठों पर कुछ कथन (प्रश्न) दिये गये हैं जिनका सम्बन्ध आपके व्यक्तित्व से है। प्रत्येक प्रश्न के सामने 'हाँ' या 'नहीं' लिखा है। इन दोनों में से किसी एक पर आपको सही (✔) का निशान लगाना है। कोई भी कथन सही या गलत नहीं है। जो बात आपके सम्बन्ध में सही हो उस पर सही (✔) का निशान लगाये। आपके उत्तर को पूर्ण रूप से गोपनीय रखा जायेगा। समय की पाबन्दी नहीं है फिर भी प्रश्न का उत्तर देने में अधिक सोच–विचार न करें। बल्कि उत्तर शीघ्र देने का प्रयास करें।

lkekftd&vkfFkd Lrj ekiuh dk i'kklu

सामाजिक–आर्थिक स्तर ज्ञात करने के लिए सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी प्रत्येक समूह के प्रत्येक छात्र–छात्राओं को दी गयी। इस मापनी के अन्तर्गत कुछ सूचनायें हैं। जिनका सम्बन्ध पिता या अभिभावक की जाति, शिक्षा एवं व्यवसाय से है। प्रयोज्य को यह निर्देश दिया गया कि वे चारों पक्षों के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी प्रदान करें। इस सम्बन्ध में उन्हें अच्छी प्रकार से स्पष्ट निर्देश दिये गये। जिससे किसी भी अवस्था में उपयुक्त सूचना प्राप्त होने में कोई कठिनाई न हो।

lko/kkfu;k

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी तथा व्यक्तित्व समायोजन सूची को भरवाते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखी गयी हैं–

- आवश्यक निर्देश को पढ़कर सुनाया और विद्यार्थियों से उसे ध्यानपूर्वक सुनने के लिये कहा गया।
- परीक्षण काल के उत्तर देते समय विद्यार्थियों को आपस में बातचीत नहीं करने दी गयी।
- यह सावधानी बरती गयी कि छात्र–छात्राओं एक दूसरे के कार्य की नकल (अनुकरण) न करें तथा परस्पर बातचीत भी न करें।
- समय की पाबन्दी न होने पर भी कार्य शीघ्र पूरा करने के लिये कहा गया।
- कक्षा में छात्र–छात्राओं के बैठने की समुचित व्यवस्था की गयी तथा हवा और प्रकाश का उचित प्रबन्ध रखा गया।
- प्रयोज्य का ध्यान भंग नहीं होने दिया तथा किसी भी बाहर के व्यक्ति को कक्षा में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गयी।

iznRr fo'ys'k.k

प्राप्त प्रदत्तों को तालिक बद्ध किया गया। इसके पश्चात् उनका विस्तृत विश्लेषण किया गया। विभिन्न समूहों के बीच अन्तर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिये टी–मूल्य परीक्षण का प्रयेाग किया गया है। इसके लिये मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटियों का अन्तर ज्ञात किया गया है। रेखा चित्र, स्तमी चित्र आदि का भी प्रयोग जहाँ कभी भी आवश्यक पाया गया है। वहाँ उनका प्रयोग किया गया है।

ifjdYiuk;s

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रमुख निराकरणीय परिकल्पनायें इस प्रकार हैं–

- स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अन्तर नहीं होता हैं
- स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की समयोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के स्नातक छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

fu"d"kZ ,oa lq>ko

इक्कीसवी सदी के द्वितीय दशक में जहाँ एक ओर यातायात एवं संचार साधनों के क्षेत्र में निरन्तर तीव्र गीत से प्रगति हो रही है। लोग कम से कम समय में विश्व के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना के बारे में उपलब्ध जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्य ने सागर की असीम गहराई तथा व्योम की विस्तृत नीलिमा को छूने का भी सराहनीय प्रयास किया है। कहने का तात्पर्य है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह अपनी सुख–सुविधाओं के लिये अनवरत् अनेक प्रकार के साधनों का विकास करता जा रहा है क्योंकि उसके अन्दर विद्यमान एवं कभी न बुझने वाली इदम् लालसायें उसे अनेक प्रकार कृत्यों में लगे रहने के लिये बाध्य करती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जैसे ही उसकी एक प्रकार की इच्छा सन्तुष्ट होती है वैसे ही तरन्तु दूसरी इच्छा उसके सामने विद्यमान होती है। ऐसी स्थिति में मानव यन्त्र की तरह ही तत्पर रहता है। ऐसे परिदृश्य में उसका स्वाभाविक चिन्तन अस्त–व्यस्त हो जाता है। वह सत्–चित्–आनन्द की त्रिवेणी से अलग हटता हुआ गरल, कुण्डा, विद्वेष की प्रदूषित धारा में डूबता उतराता रहता है। आवेगों के प्रबल प्रवाह के कारण तट पर पहुँचने की निरर्थक चेष्टा करता है क्योंकि वासनाओं के भँवर में हुयी उसकी तरणी एक प्रकार से विघटन का शिकार होती है। ऐसी स्थिति में मानव के लिये आवश्यक है कि वह अपने संवेगों, अन्तर्द्वन्द्वों, तनावों, दुश्चिन्ताओं एवं कुण्ठाओं पर नियंत्रण रखे क्योंकि वासना की ललक – सदैव व्यक्तित्व के संगठनात्मक स्वरूप को छिन्न–भिन्न करती रहती है। जिसके परिणाम स्वरूप यह किसी भी प्रकार से वातावरण में विद्यमान उत्तेजनाओं का उपयुक्त प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पाता है। यही–नहीं उसे स्थिर वस्तुओं में गति का भी आभास होता है। दूसरी ओर गति में स्थिरता का भी आभास होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने परिवेश के साथ वह अपेक्षित सामंजस्य बनाये रखने में समक्ष रहता है। इसके साथ ही साथ उसके चिन्तन में उद्देश्यपूर्णता नहीं होती है, बल्कि वह लक्ष्य हीनता की डोरी से बँधता हुआ अपनी सम्पूर्ण रचनात्मक क्षमताओं का विसर्जन ही करता रहता है। ऐसी स्थिति में परिवार, समाज, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व को अपेक्षित मार्ग–दर्शन प्रदान करने में प्रस्तुत शोध अध्ययन की महती भूमिका हो सकती है।

आज के वैज्ञानिक, तकनीकी युग में सम्पूर्ण मानव समाज यंत्र की तरह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये निरनतर अनेक प्रकार के कार्यों में लगा हुआ है। ऐसी स्थिति में वे लोग जो अपनी क्षमता के अनुकूल अपने लक्ष्यों को निर्धारण करते हैं तथा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसे लोग अपने लक्ष्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में सफल होते हैं। यदि किसी कारण से वे लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं तो वे लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग को बदल देते हैं या उस लक्ष्य के स्थान पर उसी के समान किसी अन्य लक्ष्य का निर्धाश्रण करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी क्षमता, योग्यता, प्रवीणता एवं कुशलता का भरसक प्रयोग करते हैं। निरन्तर आगे बढ़ते रहते हैं। इस प्रकार के लोगों के जीवन में असफलता या नैराश्य विद्यमान नही होती है किन्तु कभी–कभी यह भी होता है जबकि केवल भौतिक उपलब्धियों में ही अपने को पूर्ण रूप से लगा देते हैं। ऐसी स्थिति में जब कहीं कोई विघटनकारी परिस्थति उनके समक्ष प्रस्तुत होती है तो ऐसे में वे कहीं–कहीं विफलताओं के शिकार होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके व्यक्तित्व में संगठनात्मक स्वरूप में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ विकसित होती है। इस प्रकार की स्थिति सामाजिक जीवन में बहुत ही कम लोगों में देखने को मिलती है।

मानव जीवन को सहज–स्नेह की अनुभूति कराने में वर्तमान अध्ययन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। क्योंकि वह व्यक्ति सही ढंग से अपने वातावरण की उत्तेजनाओं का उपयुक्त प्रत्यक्षीकरण कर सकता है जिसका मन मलीन नहीं है। जो अनेक प्रकार की तरंगें उठने के बावजूद भी सौम्य और शान्त है। जिसका हृदय–कमल समायोजन की पंखुडियों से अनवरत् सुशोभित है, जिसके सुरमयी चिन्ता में सुबोध का दिव्य आलोक विद्यमान है तथा जो वासनाओं की व्यथा को अपनी चेतना की तरणी से दूर करने में समक्ष है, वही अपने वातावरण की उत्तेजनाआं का अपेक्षित दर्शन कर सकता है। किन्तु आज का मानव राग, विराग, प्रेम–घृणा, जीवन–मृत्यु और पोर्वात्य एवं पाश्चात्य जैसे द्वन्द्वों में इस प्रकार लगा हुआ है कि उसे चारों तरफ संदेह एवं भ्रान्तियाँ ही दृष्टिगोचर होते हैं। यही कारण है कि अनुबन्धों की कारा प्रीति की अपेक्षित रीति के अभाव में

निरन्तर टूटती जा रही है। एक ऐसी विषम परिस्थिति में प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्र–छात्राओं का ही नहीं बल्कि शैक्षिक परिवेश, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व को एक ऐसी आधार प्रस्तुत कर सकता है जिसका अनुसरण करते हुए सभी लोग आज की प्रदूषण भरी मानसिकता से मुक्त होकर वासनात्मक प्रवृत्तियों को रचनात्मक परिदृश्यों में लगाते हुये सर्जन के आयाम को और भी अधिक विकसित कर सकते हैं वस्तुत यह अध्ययन संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपवक्ता) तथा समायोजनशीलता के सम्बन्ध में सभी लोगों को यह जानकारी दे सकता है कि जिससे वे लोग इसके महत्व को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उतारकर उसे उस मार्ग की ओर प्रशस्त कर सकते हैं। जिसमें निरन्तर ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है। यह अनुसंधान कार्य विभिन्न परिदृश्य में लोगों के मानस पटल को चिन्तन, चेतना और मनीषा का सहज बोध देकर उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित कर सकता है।

lnHk xUFk lph

- ¤ पूजा होलियानवर एवं अन्य (2004): इमोशनल कांपिटेंसी एण्ड स्ट्रेड ऑन हेल्थ स्टटेस ऑफ प्राइमरी स्कूल टीसर्च एण्ड हाउस वाइव्स, जर्नल ऑफ एक्सपेरीमेंटल चाइल्ड साइकोलोजी, 88, पृ. 68–82
- ¤ बिली जोय, राइुलि (2010): इमोशनल मैच्योरिटी ऑफ एडोजिसेंट्स एण्ड एडल्ट इन जेड प्रोग्राम्स, लघु शोध प्रबंध, द यूनिवर्सिटी ऑफ साउथर्न मिसीसिपी को प्रस्तुत, प्रकाशित एवं प्रकाशन संख्या –3437907, डी.ए.आई. ए–72–02, पी.–जनवरी–2011
- ¤ बेतसूर निंगम्मा सी. एवं अन्य (2010): समायोजन के बीच सम्बन्ध और किशोरों के बीच आत्मसम्मान, एशियन जर्नल ऑफ डेवेलपमेंट मैटर्स, वॉ–4, अंक–1, पृ. 197–203
- ¤ भार्गव, महेश (1999): आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण मापन एवं मूल्यांकन, प्रकाशक–हर प्रसाद भार्गव, आगरा
- ¤ मेलिहेह घरीबी एवं अन्य (2011): सॉशल एडजस्टमेंट एण्ड लाइफ स्किल्स इन स्टूडेंट्स ऑफ जहेदन यूनिवर्सिटी, एशियन जर्नल ऑफ डबलपमेंट मैटर्स, वॉ–5(3), पृ. 58–61
- ¤ महमोउदी आर्मिन (2010): रिलेशनशिप विटवीन एडजस्टमेंट एण्ड सेल्फ स्टीम एमोंग एडोलिसेंट्स, एशियन जर्नल ऑफ डबलपमेंट मैटर्स, वॉ–4, नं.–1, पृ. 197–203
- ¤ मुहम्मद, सुलैमान (1999): सामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशक–शुक्ला बुक डिपो, पटना–4
- ¤ मैतानाह, जोनाथन एफ. एवं अन्य (2011): द कंट्रीव्यूशन्स ऑफ पेरेन्टल अटैचमेंट वोंड्स टू कॉलेज स्टूडेंट्स डबलपमेंट एण्ड एडजस्टमेंट: ए मैटा एनालाइटिक रिव्यू, जर्नल ऑफ काउंसलिंग साइकोलोजी, वॉ–58(4), पृ. 565–596

◆■◆